## 391 315

7971



्थायिषम्बार्याकें निराधे विषान्यमा हुत्येन या विषाया केवा ये विषये यहि । भारत्यम्बार्याच्या विषये विषये विषये ।

विंदभूतत्।

विस्वम्यास्य से दिन्द प्राप्त के स्वया हु से द्वापत के स्वया से स्वया से स्वया से स्वया से स्वया से स्वया से स त्रामरेगान्। पर्देशक्ष्वायन्यायक्षान्यां यहें प्रतिस्थायमें वारोना यहें प्रतिस्थायमें वारोना यहें प्रतिस्थायमें वर्व केव में प्रमा ग्रम्क्य क्षेस्रक्ष प्रमाय क्षेस्र प्रमाय केव में प्रमाप्त स्माप्त मार्थ वयश्याद्वयाद्वयाश्राङ्क्षा देवश्याद्वर्यात्र्व्यात्र्व्यात्व्यात्व्यात्व्यात्व्यात्व्यात्व्यात्व्यात्व्यात्व्य शुरायायायगदासुयाय। यहसार्ययास्रेरामी सिंग्रास्वाय हेना हेवा शुरायसमार्थेव हवा रमगः हु सेर माने वा मार्थे र रो। रे वेरे माने वा वा मार्थे मार्थ म न्यायरार्हेयायायवे यद्यामुयार्के न्याये वेयान्यया हु सेन्या वेव हु इसायरादेयाया

म्बेयहेर्गी मुयर्थे लेश्य प्रायत्म्य र्शे। किंयहेर् लेट कें सबर धेर्य यस प्रेर् शेयश्चन्यस्थरायः क्रिंशगुरः क्रेंत्रं वह्याद्यया वित्तुरः शुरायः वित्रं रंग विद्या त्रे मूं र में भे मुस्य में में मुर्प पार्थे प्रमु मुत्र पार्थ मुन्ने ने ने प्रमा प्रमु माने। ने प्रमु मा तुश्रासाधिव प्रमायके प्रमायक्षेव हैं। । यह सार्याय श्रेस्र शास्त्र या प्रमार प्राप्ति विवा ग्रिम्बाराकें दर्षे ने बाद्यमा हु से दारादे ते खें वा क्वाद्या क्षा सामा सुराया खेंद्र ब 'सु'यहें द्र'य'वेश्व प्रायदि रें स्था ग्री द्रभा ग्राद्य पर्दे 'ये में र द्वेदभा ये में र द्वेर द्वा ' गमा भेटार्डमान्त्रा र्रीमायात्रमास्त्रीमायमायात्रेमान्। विसानात्रमायमान् वित्त्या ये के मान्या क्षेत्र न्या वित्य न्या वृषाय न्या विषय अवस्थ में अवस्थ में अवस्थ में अवस्थ में अवस्थ में यर त्युर परे 'न्यायो कें भें म्या शुवन पर यथा कें भें प्रमुख्य पर त्युर दे। वह्य

द्रयथा श्रेमशास्त्र वादाद्या केंद्र द्रायो के श्राद्य वा पुरसे द्राया के वा पुरस्या प्रमाय के वा ग्रेनिहिंद्राणी मुलार्यिते अर्क्ष्व प्रमुन्द्र प्रमुद्र विश्वाय स्थुर प्रादे द्रम् ग्रेने के प्यद द्रम्य प्रमु विषयान्य विश्व र रे बेसका उत्वार प्राप्त के के विषय का का निष्य के विषय के विष यादे द्यामी के ध्यद्भस्य प्रस्थिय प्रस्थित स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत युवसा रेग्रामामी युःसं र्माकें रेरायें र वर्षे र पर्वे र प्राची र विवास के प्राची स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्था स्थाप स्य न्यगः हु से न्या ने ते सर्व न मु स न मु न क्वा के मो स न में स षर्ने न्युरी प्रहूषा न्द्रम् के प्रहेपहे स्रम्पहे। षाया रे से न्यहे षाया रे से न

युक्त इंतर श्रे कु रें पार्टे हो कें श्रव श्रे श्रू रापारे शुक्के क्या है या या वा श्राय है हो स्वार्थ स्वार्थ नुद्वेयाकृतयायामे सूर्येकृत् वह्यान्ययाने प्रवेत्याने याक्षायाये सर्वे सुर्वे प्रमुन यस विश्वाने विस्तान त्र विस्तान में विष्य स्त्र के विष्य स्त्र के विष्य स्त्र के विष्य स्त्र स्त त्युरित्र वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे या वर्ये या वर्षे यद्यामुयागुःविदादहेषाःहेवःशुः।यस्याधेवःहवःद्यषाःहःसेदःयायाःश्रीष्ययःयरःश्चेःयरः निव्यान्या अम्ने ने अध्याप्त व्याप्त विष्या निव्या विषय के स्ति के स्ति के सिक्ष सि षायारे से निप्तु हुं न शे झुर्रे या से निष्ठ के सम्मान से सुन्न रायारे सुह्ने इस ने या या न शस्त्र

निःशुःङ्गुःभःतोःशुङ्केःसान्तृतःषाःदाःसेःभूःसेःशुःन्। षदःदेवेःसेःसदसामुकान्नेःताःस्वाःद्याःतस्यः उन्युष्य नर्यो द्यापाय विया प्रदान विद्याय विया यो श्रा के प्रदाय विया प्रति । यर्रे के पर्ने मासूरका की । शिंव से इमास है। अप में से हि ज़ शुं में विदे हि ह हे हैं न्द्रणा हर्म्याह्रणा अइन्हेर्अध्याद्वाणा हर्म्य अर्म्स्ट्रिस्ट्रेस्ट्रिस्ट्रिस्ट्रिस्ट्रिस्ट्रिस्ट्रिस्ट्रिस्ट्रिस्ट्रिस्ट्रि यो प्रसिद्धे । अपना में से प्रसिद्ध हूं व शे सु में पार्ट के के अस शे भू माया में शुक्के इस पे या या यमुन्दुः सः प्रविश्वन्वीद्रश्याया विषा न्द्रान्य विष्य विषा विश्वास्त्र विष्य विश्वन्य विष्य विश्वन्य विष्य विश्वन्य विष्य विष्य विश्वन्य विष्य विश्वन्य विश्वयम्य विश्वन्य विश्वयम्य विष्यम्य विष्यम वेद्वेन्त्रिन्ते हें मुद्दाया प्रयाप्तया अम् ने अध्याप्त प्रमुख्या प्रमुख्या

स्हे। षायारे से निस्हेषायारे से निस्तु हुं वा श्रेष्ट्र रें या दें ने। षे श्रिस श्रेष्ट्र या रे यद्यामुयान्ने पात्राचित्रास्य वित्रास्य वित्रास्य वित्राम्य वित्राम वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्राम् शेनिल्लास्त्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या विद्वार्थात्राच्या स्वत्राच्या स्वत्राच्या स्वत्राच्या विद्वार्था विद्वार्थी व कें स्हे स्हे अनुस्हे। षाया रे भे न्स्हे षाया रे भे न्स्ति कें स्व कें स्व रे से हैं रे या रे ने। कें सम मिशकें न्राधे नेशन्यमा हु सेन्यते सर्वे सेन्ये मुस्य सें। । । । सेन्ये स्वाधि सेन्ये स्वाधि सेन्ये सेन्ये सेन्

षायारे से निष्णु स्कूत स्वीते देशित हे मिं में मूं या ति वृत्या तृत्या षा माने ने समुद्री यह या त्रुः व्या कें स्ट्रेस् क्षें स्रम् श्रेन्नू रायारे शुक्के इस हे या या वा सास्य है है। स्रा कुल सामि श्रे हैं। सा कृत या या रे स्रा रे स्रा रे स्रा रे गरेगामेशकें दरणे नेशद्यमातृ सेदाये सर्वे स्वे पदि मास्य मास्य ने। षायारे से निष्णु स्कूत सुरी वेद्विन ने में रूई या निवृत्या नृत्याष्ट्र याष्ट्र ने समुर्य पहुं या न्द्रम् असिट्टेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रे अय्य रेसे निस्ट्रेख्य य रेसे निस्ट्रेड्र में मुर्ने य र्डें है। कें अस अं भूरपर रे शुक्के इस हे गागान अस्त हे स्वाह स्वारी शुक्के स द्वा पाय रे स्रेरे श्रुक्ष यद्दे दे के अद्यम् मुया द्वे प्रदेश स्या प्रवे प्रदेश स्या प्रवेष प्रदेश स्या प्रवेष प्रदेश स्या प्रवेष प्रदेश स्या प्रवेष प्रदेश स्था प्रवेष प्रवेष प्रदेश स्था प्रवेष प्रदेश स्था प्रवेष प्रदेश स्था प्रवेष प्रवेष प्रदेश स्था प्रवेष प्रदेश स्था प्रवेष प्रवेष प्रदेश स्था प्रवेष प्रदेश स्था प्रवेष प्रदेश स्था प्रवेष प्रदेश स्था प्रवेष प्रवे

इयासिन अयरिक्षण्यहान्याचिक्षिनिनेहिन्नेहिन्नेहिन्ने मधुर्यु तङ्कुषा ५५ द्वा कें स्ट्रेस् न्दःन्व्यक्षायां विवासीक्षात्रे विवाद्या प्राप्ते स्वादे स्वादि स्वाद्या विवादि स्वाद्या स्वा वार्से इया सिन् अया से से जिल्ला सुद्धा वास्त्र वास्त्र में विदेश हो हैं में मूर्य का का मानिया षद्रियश्यश्या प्रवाद्य विद्या स्वार्ह्यं वार्षा कृति । क्षें स्वर्धा क्षें स्वर्धा के स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्ध के स्वर्ध के स्वर्ध के स्वर्ध के स्वर

नुङ्केयाकृतायायाये सूपरे कृष्ण यदादेवे के बद्या मुका ग्रेपा स्या के सु साम्या के सु साम्या के सु साम्या के सु स याम्डिमान्द्रन्तुद्रश्यां डिमामीश्रार्केन्द्राधोः विश्वन्यमानुः सेन्यते सर्ने श्रेप्तने माशुद्रश वैं। जिंदारें इपासिने जायारे से निष्णु स्हूदिन सुरोदि है निने हैं दूर्या निश्चान पद्ये ग्रे अ के प्राप्त के प्राप्त के वार्ष प्राप्त के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के व 

ष्णया में से कि स्पृष्ट्वेष्णया में से कि स्पृष्ठ हूं व से मु में या में कि स्व से सू माय में शुक्के हुस हेपायान्यस्य सम्बन्धः स्वाप्तः स्वापतः स्वा न्यग्राप्तुं सेन्यते सर्ने हे तर्ने धे यो स्त्रेत्या धे यो स्त्रे स्त्रिया ने देते हें बन्या यशकें तें प्रमुश्चपायर त्युररें। किं यदस्य यर दियेय पर त्युररें। किं दिरें गासिन्। षायारे से निष्णु सह व राये वेहिन ने हैं में मूर्या निष्ण षह ने राया से इंरेंपर्डें है। कें अस्त्रें भूरपर्रे शुक्कें इस्हें निया यात्र अस्ति हैं अस्ति शुक्कें सर्ज्व णयार्ने भूरे भूष् भूष् विषा कें प्राची में विषा कें प्राची कें प्र वर्षित्या धार्मेरवर्षेरवह्याता देखेयकाउवाद्यायात्रा व्याप्तिरमें भ्रेषावया

त्रा ग्रिव हेरे रहिगाहेव रुव सर्जा प्रमान स्थान यर श्रेष्ट्रीयर शेष्ट्यूर है। यद दियाद मार दिश्चेष्ट्र स्थित श्रेष्ट्र स्थाद स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स त्युरःर्रे। । षाँन्रें इयासिने। षायरे भेन् ष्युष्ट्रुन् राष्ट्रिनि हे निर्देश्य निःवृःयाःनृःया अङ्गाने अध्यौःसङ्कृया निज्ञः । अँस्ट्वेस्ट्वेसङ्ग्रेस्ट्वे। अयः से से निस्ट्वे षायारे से कि सुद्ध हूं व से सुर्रे या दें के। के सम से सुर्रे या रे सुक्के हम के मामाव सम्म हेर्युः इंस्पेने शुक्कें या दृष्ठा व्यापारी सूरी यूर्यु या वापाया विवार्के दरायो वेया दिया। हुं सेन्यते सर्वे कें तर्वे धे मेन्यत्वेतसा धे मेन्यत्वे मत्त्वमाना नेकार्के का गुःस्टार्ये 

स्हेप्सन्यहे। षायारेभे निस्हेषायारेभे निस्तु क्षंत्र के क्षंत्र के के कि के कारा के क्ष विया कें दर थे वेश दयया हु सेद यदि सर्दे कें तदे थे यो मेर द्वेदस्य थे यो र द्वेर द्वेर द्वा व। देशकेंशग्रीस्टार्याम्बर्धायन्त्रित्वेश्वर्धेरान्ते प्रत्यक्षायाद्या स्वाप्त्याव्या याधेवार्वे। किंवार्वे इयाभिते। कायारे के निष्णु स्कूवार्यि वेष्ट्रिन ने हैं यूर्या निष् गानुषा षर्ने ने अध्या निष्ठ्या निष्ठ्या के सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह । ष्राय में से हे ष्रा यानियो नियु हुं वाक्षे सुर्वे प्राप्त के कि विकास के सुर्वे के स्वाप्त के सुर्वे के स्वाप्त के स्वा श्रृङ्गुः भाषी शृङ्के या मृत्र वा पार्य में भू में श्रृः श्रृ वा वा विवा कें न्या के श्रान्यवा मुसे निया मार् यर्रेकेरदर्भे पर्रेषे मेरद्वेदया धे मेरद्वेरद्वेरद्वाता देशयर्व्यश्रीर्प्य व्या

यदार्यद्रश्राम्य विद्या षाया रे से निस्द्वेषाया रे से निस्दु हुं व शैचु रे या रें ने। के सिर्म शैच्च राया रे नुक्के द्वा नेपायान्यसम्भानेप्रम् नेप्रम् न्यमानुः सेन् प्यते सर्ने द्वे प्यने प्यो मान्य प्रायो स्थाने मान्य स्थान नियं देवा स्थान स्टार्ये रे रवार्ड्या सटासेंद्र शुनुदावर त्युर रे । सिंद सें इया सिंह। साम रे से ह ष्युष्ट्रान्य सुर्य विदेश निर्मे देश निर्म्या निर्म्या प्रमान्या ष्रमाने सम्माने स्वा प्रमाने स्वा प्रमाने स्व स्हेप्हेयकृत्रहे। षायारे से एप्हेषायारे से एप्हे ब्राम्य के स्वार्थ के स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ 

विगार्से दराये विद्याद्यमा हु से दाये सर्वे स्थे दि ये यो मारे दिया यो मारे दिया । व। ने या पत्र प्रप्त प्राचित्र ग्री में श्री भ्राप्त । या वे प्राचित्र में विष्ण में या विष्ण में विष्ण में या विष्ण में या प्राचित्र में विष्ण में या विष्ण में या प्राचित्र मे विद्वेन्त्रिन्त्रे में मूर्या प्रयाप्या अम् पेर्श्वया मुक्षा प्रमुख्या प्रमु स्द्वे। षायारे से निस्द्वेषायारे से निस्तु हुं व शैच्चरें यारे ने। षे श्वर शैच्चर रे नुहे इस्रिन्यामान्यस्मिन्ते स्वास्त्रम् विश्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य स्वास्त क्षान्यमाप्तुः सेन्यते सर्ने क्षेयने प्योग्योग्यने यही वस्योग्यने मान्यने प्राप्त क्षेयो विष्योग्यने प्राप्त क्षेयो विष्योग्यने प्राप्त क्षेयो विष्योग्यने प्राप्त क्षेयो विष्योग्यने प्राप्त क्षेया विष्योग्यने प्राप्त क्षेया विष्योग्यने प्राप्त क्षेया विष्य क्षेया विष्योग्यने विषय क्षेया क्षेया विषय क्षेया क्षेया क्षेया क्षेया क्षेया क्षेया क्षेय क्षेया क्या क्षेया दक्षे'यदे'तृषागुं'कें'ष्रम्षामुषानुं'यप्षाप्तग्पर्गुं'यसुः इप्तगुषायरें द्वाष्ठ्रयात्।सुराक्षेत्यरः सर्ट्रो सरमामुमार्स्रेटामी दे त्यासमार्मेटाचरात्युरार्दे। सरमामुमार्गी विद्यमा

यद्यामुयागुःविदानुःवर्गेः प्रमासद्यामात्युमात्रे। वद्यायाचे स्रियान्दा। व्रियाने प्रमा न्द्राया प्रम्याप्त्या ष्रम्पे न्यस्यू प्रमुख्या प्रमुख्या प्रमुख्या प्रमुख्या क्रिस्ट्रिस ज़य़ॖॾॖ॓ॱख़ॱय़ॱय़॓ॱऄॱज़य़ॖॿॖॱॾॢ॔ॱॺॱॺ॓ॱॿॢॱॕॱय़ॱऄ॔ॱॸॖ॓। ऄॕॱॺॾॱॺ॓ॱॠॗॱॸॱय़ॱय़॓ॱॶॾॗ॓ॱॾॢॾॱॸ॓ॖॺऻॱॺऻॱॺॱ शस्त्राने श्राद्धाः सामे शुक्के सान्वा प्याप्ता से स्वाप्ते श्राद्धा वादा विवा के दिया के सद्यवा हु सेन्यत्यत्यित्रान्धेयन्ये वित्राय्या विष्योग्यत्या स्थाने न्यत्या स्थाने न्यत्या स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स नेते सुं प्रवेत तुर विद्या विद्या विद्या प्रमुप प्रवेत स्वय से विद्या वि षिंत्र सें इया भने। षाय में से निष्यु सुहू व सु ये विदे नि ने हैं मु है या निष्यु मानू या षद्रिम्भुर्युः स्कूषा ५५ वा विद्युष्टि स्कूष्य विद्युष्टि स्वर्ष्य विद्युष्टि स्वर्थि स्वर्थ स्वर्थि स्वर्थि स्वर्थि स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थि स्वर्थि स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य

नुङ्के'याकृत'ण'यार्भे'सूर्भे कृष्ण मारावेगार्के'न्राणे नेकान्यगात्रुः येन्यरे यर्भे स्रेप् धें में र द्वेदम। धें में र द्वेर द्वारा ने ने प्रें प्रवेद मिने मुर्ग पर दें र प्रमा हु से र यदे अदश्कुश्यो विद्यदेषा हेव श्री विश्वश्य विद्य विश्वश्य विश्वश्य विद्य विश्व विश्व विद्य विश्व इयासिन अयर्भेर्भेन्ष्यम् अङ्ग्वासिन्देष्टेन्ने देश्या निव्यान्य अङ्गे मध्यौ तङ्का प्राप्त विद्या के स्विष्ट व भैं नु रें पार्चे है। के अव भैं भू रायारे शुक्के इस हे या या व अस्त है भू नु भ ये शुक्के सा तृत्यापायारे सूरोत्रुत् यार्धियायायाद्यात्ये स्रोत्यात्यात्री यदी यदी यदी यार्थियायादी 

न्यायी द्वाया अप्याप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्था यते गुरक्त मुं अर्देव यर हैं ग्रायर तर्वंद कु यर त्युर दे। । । श्रेंव से इंग अप के वि षायारे से निष्युष्ट्र व स्यो वे दे नि ने हें मुर्च या निष्या निष्या षर ने सम्या विद्या त्र व्या के स्टिश्च के साम् स्टिश काया में से प्राप्त के काया में से प्राप्त के कि स्टिश्च के स्टिश्च के स्टिश क्षें श्रम् श्रं श्रू राय रे तृ है इस हे या या व श्रम् हे हे श्रम् हे स्व या ति है सा द्व या या रे स्व रे श्रू त्रा गर विगार्के प्रमाये विश्वप्ता पृत्ये प्राये स्थि स्थि से रावित्या धियो रा वर्षेरवह्याव। नेव्दारेशन्ये सुर्वसक्ष्य स्थान्य स्थान् ने। षायारे भे निष्युष्ट्र व श्राये वेद्विन ने में मूर्या निष्युया ष्रम ने श्राये यह षा ५५ वा कें स्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्स्या

र्डे है। के अम श्रेश्वा प्राप्त श्रिक्के इस हे या या न श्रास्त्र हे श्रेश्वा स्वी श्रिक्के सामृत या पार्य भे अर्रे क्रिया के प्रत्येष के प्रत्येष के कर्म मात्रियों हु से प्राप्त के क्रिया मात्रियों के क्रिया मात्रिय ग्रम्भायात्राम्डिमाञ्चेत्रायाचित्रात्र। देशाङ्गेरामाञ्च्याची। श्रेंराकेतायितारहेताची। त्यश्रीत र्ये के क्षापत्त श्रीका विषय श्राप्त ग्राप्त के क्षेत्र पाष्ट्रित प्राप्त श्री विषय है। इन्यासिन अध्याने से मिन्यू पहुंच सुनि देष्ट्रिन ने हैं न मिन्यू पहुंच कर में यश्यौ त्रङ्कृषा न् न् व्या कें स्ट्रेस्ट्र त्युरप्रदेश न्यप्तेर्केशयवयन्याय्यस्रेन्यपुर्यस्य त्युरर्रे। । षेष्त्रं से स्वाप्त सन्। षायारे भे निष्णु स्हून श्राचे निष्ठे निर्ने में मूर्या निष्णा षह ने श्राम्य त्रङ्गुणा ५५ द्या कें स्ट्रेस् र्रें पार्डे है। के अरा श्रेश्ना रापारे शुक्के इस हे या या वा या या या सुन हे या सुन यो शुक्के या दूव पा र्दिन शुरुषान्दा नृगुः श्वायाया श्रेषाषायाया देवाया के स्वायत्वा गुष्ठा सकेनाया व्यायते । ॸॱॴॗॱॴॖॾॣॱॺॱॶॱॻ॓ॱॺॆऄॗॱॸॱॸ॓ॱॾॕॱॸॱॾ॔ॱॴ ॸॱॿॄॱॴॱॸॖॻॿॗ

क्रास्ट्वेस्ट्वेस्ट्वेस्ट्वेस्ट्वे कारार्थेशे प्रस्ट्वेकारार्थे शे प्रस्टु क्ष्य से हिस्ट्वेस्ट्वेस्ट्वेस्ट्वे यस्यं भूरायारे वृह्ने इसि ने याया व यास्ति ने युन्ने स्यापे वृह्ने सान्व प्यापे रे सूरे युन् वर्रे क्षु है। द्येरवा देव यें केवे स्दर्ये देवे कुण यें देर राज्य है। हैव या हैव यानेतेयक्षेन्वस्थानी सुराधिते र्कन्ते यग्रायम्बुक्षान्। केन्द्राधे वेक्षान्यगृह येद्रायदेश्यर्देश्वेष्ट्रवेद्रायश्चिद्रव्यश्चात्रात्यस्य विष्ट्रवेद्रवेष्ट्येष्ट्रवेष् इन्यासित्। षायामेश्रीतृष्णुस्तु वार्याचेत्रिक्तिति हेन्ति हिन्दिस्या त्रव्यातृष्णा ष्रम्ति यश्यौ तङ्का ५५ व के प्रदेश व शं हु रें पा रें है। कें श्रव शं भू राप रे शुक्के इस हे या या व श्रव है स्वा व श्रव है सा व श्य है सा व श्रव है सा व श्रव है सा व श्रव है सा व श्रव है सा व श्य नृत्यणयारे सूरे कृत् वरे सुर्व दि से हो दिये र व मु सर्वे केव ये पि व विक्र के कि का का का या र पि र

विषाश्यामे मे त्रश्याम्यम्य स्त्रश्यो। के प्रयाभिष्ण निष्ण प्रमा हिसे प्रयोग ह वर्षेत्वस्या गुःस्टार्येदेर्स्त्वेष्व वर्ष्य वर्षेत्र्यं व्याप्य वर्षेत्रः वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे यत्र श्रे भू र पारे शुक्के क्रिं हे स हे या या व या स्व है है या कु या पि है या कु व या पारे यू रे यू कु ग्राट्येग्याकें प्रत्ये के अप्रयाप्तु के प्रयोग्या विष्ये प्राप्ति के प्रयोग्या के प्रयोग्या विष्ये प्रयोग्या विषये विषय वह्यायाय। पश्चेश्वरात्वशाति। सर्वेत्यावेत्यरात्युरापातेशास्या 

णा हिन्नुया एणा अइ हे अधुरी सङ्घणा हिन्नु असि है सह सह अह अह असि है। असि है सह अह अ स्हेषायारेसे अन्त्र्वाहृत्यक्षाहृतेषार्वाह्य स्मिति स्वासिति हैं सामिति हैं सा यदःदगाःतवग्रम्। । श्रेषोःश्रेदःमोःश्रेवःप्रतेःश्रेवशःहेग्रभःहे। । श्रेदःहेःउवःग्रेःग्रेदः। वह्मायात्र। श्चित्रयिरेष्ट्रियश्यीःश्चात्रेश्चायश्यम्। र्द्ध्याविस्पर्द्ध्यश्चित्राष्टित्राष्ट्याश्चित्राष्ट्याण्याः यद्यामुर्यायदाद्यायययाय। शिषीः योद्यो र्स्याप्तिस्या स्थित्या स्थित्या स्थित्या स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य ग्री में प्राप्ति प्राप्ति । व्हिंय विभ्रम क्रियम ग्री क्री क्रियम ग्री क्रियम क्रिंचर्या गुरुष्य सम्बाधित विश्व वि । श्रेट हे उत्र ग्रे में दाने र तह्या यात्र। । या वित्र दिर श्रेय श्रेय श्रेय श्रेय श्री श्री विषय स्वर त्युर

विक्रेंत्रव्युक्षःक्रेंत्रवार्ग्धेक्षःक्षरका सुरुषदार्वा विक्षेत्रवे विक्रेंत्रवे व क्रिंत्रशर्हेग्राश्ति। क्रिंदरहेरडवरग्रीरग्रियरप्रमायव। विर्देवरग्राश्रीक्षात्रीक्षात्रे र्भरमो प्रमानित र्ह्मेयम हिंगमा है। क्रियह र के में में प्रमान किया । प्रमान यान्वः क्षेत्रवार्यः क्षुत्वे यायावारार रखुर। विवारता क्षेत्रवार्ये वावावार वार्ष वस्यामा । भ्री भी से दायो ने सार या क्षेत्र मार्थि । । क्षेत्र हे उत्यो में दा हिर वह्या या 

श्वार्थाञ्चारायारे शुक्के इसि हे मानायायायाया स्थान हो स्थाने शुक्के सान्य स्थाने सुक्के सान्य सुक्के सुके सुक्के सुक्के सुक्के सुके सुक्के सुके सुक्के सुक्के स यर्डें अ'ख़्व' तद्वाद्वी व्यादे द्वादे के वित्र देव वित्र वि शूरपाद्या वस्रक्षक्रप्रदाये वर्षे वर त्रा देःबरःवरुषायिःवहेषाःहेवःधेःस्वाहे। वर्डेशःध्वावद्याःग्रेषाण्यास्याः सर्वियम्य वर्षेत्रं दिष्या श्राया कें द्रायो भेश्य द्या पृष्ठे से द्या के श्राया के वा स्था के वा स्था के वा स रेंदि'सरें हेंया या सेंग्रा कुष्ण राष्ट्री पहुन एकुष्ण सङ्गुष्ण प्राप्त स्वाप्त स्वाप्

